इकाई 19 अनुवाद का पुनरीक्षण

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्देश्य

19.1 प्रस्तावना

19.2 पुनरीक्षण क्या है?

19.3 पुनरीक्षण कैसे होता है?

19.3.1 मूल पाठ और अनुवाद को पढ़ना

19.3.2 अनुवाद और मूल पाठ का मिलान/तुलना

19.3.3 कथ्यगत गलतियों का सुधार

19.3.4 भाषागत गलतियों का सुधार

19.3.5 शैलीगत सुधार

19.3.6 अनूदित पाठ की लक्ष्यभाषा संस्कृति की दृष्टि से जाँच

19.3.7 फॉर्मेट संपादन

19.4 पुनरीक्षण कौन करता है?

19.5 पुनरीक्षक प्रशिक्षक भी होता है

19.6 पुनरीक्षण का महत्व

19.7 पुनरीक्षण का अभ्यास

19.8 आइए अभ्यास कीजिए

19.9 सारांश

19.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

19.11 उपयोगी पुस्तकें

19.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- बता सकेंगे कि पुनरीक्षण क्या होता और इसे कौन करता है;
- पुनरीक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- पुनरीक्षण के विभिन्न पहलुओं की चर्चा कर सकेंगे; और
- अनूदित सामग्री के पुनरीक्षण का प्रयास कर सकेंगे।

19.1 प्रस्तावना

'अनुवाद : प्रक्रिया और प्रविधि' से संबंधित इस पाठ्यक्रम के पिछले खंडों की विभिन्न इकाइयों में आप अनुवाद की प्रक्रिया–प्रविधि, प्रकार और रूप, साधन–उपकरण, शब्द निर्माण और पारिभाषिक शब्दावली और मशीनी अनुवाद आदि के बारे में पढ़ चुके हैं।

अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि को भली प्रकार से समझने के दौरान आपने अनुवाद की बारीकियों की व्यवहारजन्य जानकारी प्राप्त की है। इसके अलावा आपने कोशों तथा उनके उपयोग के विषय में भी पढ़ा है। विभिन्न प्रकार के कोशों का अनुवाद में इस्तेमाल करना भी आपने सीखा है। भाषांतरण के साथ–साथ लिप्यंतरण की प्रक्रिया को भी आपने जाना–समझा है, अनुवाद में इसकी आवश्यकता एवं महत्व से भी आप परिचित हुए हैं। इस सबके अतिरिक्त अनुवाद के अत्याधुनिक रूप मशीनी अनुवाद के विषय में भी आपने विस्तार से अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में आप अनुवाद के अगले चरण पुनरीक्षण, मूल्यांकन और समीक्षा के बारे में पढ़ेंगे। इस क्रम में सबसे पहले हम अनुवाद के पुनरीक्षण के संबंध में विचार करें। हो सकता है कि पुनरीक्षण से आप पहले से परिचित हों और यह भी हो सकता कि आपने इसका नाम भी न सुना हो।

अनुवाद से संबद्ध प्रत्येक व्यक्ति को पुनरीक्षण एवं उसके महत्व के बारे में जानकारी अपेक्षित होती है। प्रस्तुत इकाई में हम आपको यह बताएँगे कि पुनरीक्षण क्या होता है? यह कैसे होता है और किस–किस स्तर पर होता है? इसे कौन करता है तथा कौन कर सकता है? पुनरीक्षण के बारे में इन सभी प्रकार के प्रश्नों का जवाब देने के बाद हम आपको पुनरीक्षण संबंधी अभ्यास भी कराएँगे। आइए, सबसे पहले यही जानें कि पुनरीक्षण क्या है?

19.2 पुनरीक्षण क्या है?

पुनरीक्षण अनुवाद की जाँच और सुधार की प्रक्रिया है, जो अनुवाद कार्य पूरा हो जाने के बाद की जाती है। अंग्रेजी में इसके लिए 'Vetting' शब्द इस्तेमाल होता है। पुनरीक्षण करने वाला व्यक्ति 'पुनरीक्षक' (Vettor) कहलाता है। जैसा कि 'पुनरीक्षण' नाम से ही स्पष्ट है, यह अनुवाद को फिर से देखने, मूल पाठ से मिलाने, मूल और अनूदित पाठ की परस्पर तुलना करने और अनूदित पाठ में अपेक्षित सुधार–संशोधन का कार्य है। इसमें अनुवाद की विभिन्न स्तरों पर और कोणों से जाँच की जाती है तथा जहाँ भी आवश्यक हो उसमें अपेक्षित सुधार किया जाता है। इस दृष्टि से इसे अनुवाद को सँवारना और उसका संपादन करना भी कहा जा सकता है।

मूल और अनुवाद की तुलना तथा अनुवाद की गुणवत्ता की जाँच–परख करने के कारण पुनरीक्षण को अनुवाद की समीक्षा करना भी कहा जाता है। लेकिन, 'समीक्षा' की बजाए 'पुनरीक्षण' शब्द अधिक उपयुक्त है क्योंकि किसी पाठ अथवा कृति की समीक्षा करते समय उसकी गुणवत्ता का मूल्यांकन करने के साथ–साथ उसकी सीमाओं और संभावनाओं पर समीक्षक अपनी राय देता है। लेकिन पुनरीक्षण की प्रक्रिया में पुनरीक्षक अपनी राय या टिप्पणी नहीं देता। पुनरीक्षण करते समय अनूदित पाठ में सुधार, संशोधन एवं संपादन किया जाता है और उसे बेहतर बनाने का प्रयास किया जाता है।

अंग्रेजी का 'Revision' शब्द भी 'दोबारा अवलोकन और जाँच' के संदर्भ में उपयुक्त होता है। इस दृष्टि से 'vetting' और 'revision' काफी निकट अर्थ रखते हैं। लेकिन अनुवाद के संदर्भ में 'vetting' शब्द ही उपयुक्त होता है। यह अनुवाद प्रक्रिया का तकनीकी पारिभाषिक शब्द है जो सूचनापरक साहित्य के अनुवाद से विशेष रूप से संबद्ध है। वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक, वाणिज्यिक, विधिक तथा अन्य सूचना प्रधान विषयों के अनुवाद में इसका विशेष महत्व है। लेकिन, यहाँ यह बताना भी अनुचित न होगा कि

साहित्यिक रचनाओं के अनुवाद के संदर्भ में 'पुनरीक्षण' शब्द अक्सर नहीं चलता है। कारण, साहित्यिक अनुवाद प्रायः स्वप्रेरणा से और सर्जनात्मक इच्छा की पूर्ति के लिए किया जाता है। इसमें अनुवादक भाव–विधान तथा शिल्प संबंधी छूट लेने का अधिकारी होता है। इसलिए, साहित्यिक रचनाओं के अनुवादों के पुनरीक्षण की अपेक्षा नहीं होती। उनकी तो समीक्षा या मूल्यांकन होता है।

हाँ, संस्थागत स्तर पर जब साहित्यिक अनुवाद कराया जाता है – साहित्य अकादमी, नेशनल बुक ट्रस्ट या ऐसी ही अन्य संस्थाएँ जब किसी कृति का अनुवाद कराती हैं तो उस अनुवाद की जाँच उस क्षेत्र–विशेष के किसी विद्वान द्वारा कराती हैं। लेकिन यह जाँच भी मूल्यांकनपरक ही होती है।

19.3 पुनरीक्षण कैसे होता है?

पुनरीक्षण की प्रक्रिया में निम्नलिखित कार्य शामिल हैं :

19.3.1 मूल पाठ और अनुवाद को पढ़ना

पुनरीक्षक, अनूदित और मूल पाठ को पंक्ति–दर–पंक्ति पढ़ता है। इसमें ऐसा नहीं होता है कि एक बार मूल पाठ को पूरा पढ़ लिया जाए और फिर उसके अनुवाद को पूरा पढ़ा जाए। ऐसा करने से तो केवल यह पता लगाया जाएगा कि मूल कृति/पाठ में निहित समस्त भाव अनूदित पाठ में आ पाया है अथवा नहीं। पुनरीक्षण में मूल पाठ की प्रत्येक पंक्ति को अनूदित पाठ की प्रत्येक पंक्ति के साथ पढ़ा जाता है। इससे यह पता लग जाता है कि कोई अंश अनुवाद किए बगैर छूट तो नहीं गया है। यदि छूटा है तो क्यों छूटा है? भूलवश अथवा जान–बूझकर। यदि जान–बूझकर छोड़ दिया गया है तो छोड़ने का कारण भी पता लग जाता है। यह भी पता लगाया जाता है कि वह अंश छोड़ने लायक है या नहीं। यदि भूलवश छूटा है तो पुनरीक्षक उस अंश का अनुवाद करता/कराता है। सूचनापरक साहित्य में अक्सर कथ्य का कोई अंश छोड़ा नहीं जाता क्योंकि वहाँ भावानुवाद नहीं होता है। लेकिन यदि किसी अंश को अनुवाद में प्रस्तुत किए बगैर भी बात पूरी हो गई हो या कोई अंश लक्ष्य भाशा के मुहावरे के प्रतिकूल हो तो उसे रखना अनिवार्य नहीं होता।

19.3.2 अनुवाद और मूल पाठ का मिलान/तुलना

मूल पाठ और अनुवाद को पंक्ति–दर–पंक्ति पढ़ते हुए दोनों की तुलना की जाती है। यह तुलना कथ्य और भाषा शैली, दोनों के स्तर पर होती है। तुलना की इस प्रक्रिया में पुनरीक्षक यह जाँच करता है कि अनुवाद में कोई भूल तो नहीं रह गई। क्या अनूदित पाठ में वही सब कुछ कहा गया है जो स्रोत भाषा पाठ में निहित है। कहीं दोनों पाठों का आशय अथवा निहितार्थ अलग–अलग तो नहीं जा पड़ा है। दोनों के कथन के ढंग में कोई ऐसा अंतर तो नहीं है जिसके कारण दोनों पाठों की भिन्न–भिन्न ध्वनि निकलती हो। कहने का अभिप्राय यह है कि पुनरीक्षण की प्रक्रिया के दौरान, पुनरीक्षक अनूदित पाठ की सीमाओं, अस्पष्टताओं तथा कमियों का पता लगाता है और उसमें अपेक्षित सुधार करता है।

21.3.3 कथ्यगत गलतियों का सुधार

मूल पाठ और अनुवाद की तुलना करने पर पुनरीक्षक को अनुवाद में जो भी कथ्यगत भूलें और अशुद्धियाँ मिलती हैं, उन्हें वह सुधारता है। पुनरीक्षक यह देखता है कि अनुवाद का वही अर्थ निकल रहा है जो मूल पाठ का निकलता है या नहीं। जहाँ कहीं भी मूल और अनूदित पाठ के अर्थ में भेद होता है, वहीं वह अनूदित पाठ में सुधार करके उसे मूल पाठ के निकट लाने का प्रयास करता है। अनुवादक के द्वारा की जाने वाली कथ्यगत गलती को समझने के लिए एक उदाहरण लेते हैं। जैसे, निम्नलिखित अंग्रेजी पंक्ति और उसका अनुवाद देखिए :

मूल : I have no reservation about this point.
अनुवाद : मेरे पास इस मुद्दे पर कोई आरक्षण नहीं है।

ऐसी स्थिति में पुनरीक्षक मूल पाठ के कथन का निहितार्थ प्रस्तुत करके अनुवाद को सुधारता है। इस अनवुाद में मूल वक्ता का आशय बिल्कुल भी नहीं आया है। जैसे, उपर्युक्त वाक्य में मूल वक्ता यह कहना चाह रहा है कि 'इस विषय पर मेरा कोई मतभेद/असहमति नहीं है।'

19.3.4 भाषागत गलतियों का सुधार

कथ्यगत और अर्थगत गलतियों के सुधार के साथ–साथ पुनरीक्षक अनुवाद की भाषा संबंधी भूलों का पता लगाता है। वह देखता है कि अनूदित पाठ की भाषा कथ्य के अनुरूप है अथवा नहीं। जैसे, मूल पाठ के विषय के अनुकूल शब्दावली का प्रयोग लक्ष्य भाषा में किया गया है अथवा नहीं। आप जानते होंगे कि विभिन्न विषयों की अपनी–अपनी शब्दावली होती है। जैसे विज्ञान, विधि और साहित्य के क्षेत्र की शब्दावली में पर्याप्त अंतर होता है। अनुवादक स्वयं ध्यान रखता है कि विषयानुकूल शब्दावली प्रयुक्त हो। फिर भी पुनरीक्षक को जाँचना होता है कि कहीं अनुवाद की शब्दावली अनूद्य विषय से दूर तो नहीं जा पड़ी। उदाहरण के लिए, 'Plant' के मायने 'पौधा' और 'संयंत्र' दोनों हैं। उद्योग संबंधी अनुवाद में इसका आशय किस 'प्लांट' से है – किसी औद्योगिक इकाई से अथवा उन पौधों से जिनसे उद्योग के लिए कच्चा माल मिलता है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित दो वाक्यों को देखिए। इनमें रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। पहले मूल वाक्य में 'Plant' से आशय 'संयंत्र' से है और दूसरे में 'पेड़–पौधों' से :

(a) Mother dairy plant has been installed.

(b) Medicinal plants have been provided to the villagers.

इसके अलावा, पुनरीक्षक को यह भी देखना होता है कि कहीं अटपटी भाषा तो नहीं प्रयुक्त हुई है। वाक्य विन्यास सहज है या नहीं। अनुवाद की भाषा लक्ष्य भाषा की प्रवृत्ति और मुहावरे के अनुकूल है कि नहीं। निम्नलिखित उदाहरण भारत सरकार के मंत्रालय द्वारा जारी विज्ञापन से है। आप इसे पढ़ते ही समझ जाएँगे कि यह मूल भाषा में न लिखा होकर अनुवाद है और वह भी कैसे हू–ब–हू शब्दानुवाद :

> एक प्रदूषित आकाश आपके जीवन को कम बना देता है
> मोटर वाहनों के प्रदूषण पर नियंत्रण कीजिए।

अंग्रेजी में कहा गया होगा :

A polluted sky reduces your life.
Control motor–vehicle pollution.

अब हिंदी में यह जरूरी नहीं है कि आप 'a' के स्थान पर 'एक' अवश्य लिखें। फिर आसमान दो–चार नहीं होते इसलिए भी 'एक' लिखना बेमाने है। इसी तरह, 'आपके जीवन को कम बना देता है' हिंदी भाषिक मुहावरे के अनुकूल नहीं। इसकी जगह लिखना चाहिए – 'प्रदूषित आकाश आपकी उम्र घटाता' अथवा 'प्रदूषित आकाश से आपकी आयु क्षीण होती है'। इसी तरह, 'मोटर वाहनों का प्रदूषण' नहीं 'मोटर वाहनों से होने वाला प्रदूषण' लिखा जाना चाहिए।

अब तक की गई चर्चा से आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवाद की भाषा संबंधी भूलों का पता लगाने की प्रक्रिया में पुनरीक्षक उपयुक्त शब्दावली का प्रयोग करता है तथा वाक्य–विन्यास में अपेक्षित संशोधन और सुधार करता है। साथ ही, वह यह भी देखता है कि भाषा कथ्य के स्वभाव के अनुकूल है या नहीं। कहने का तात्पर्य है कि गंभीर, सरल, हास्य–प्रधान आदि विषयों के अनुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है या नहीं, यह देखना पुनरीक्षक का दायित्व है।

21.3.5 शैलीगत सुधार

हर विषय और स्थिति के अनुरूप लेखन की विशिष्ट शैली होती है। इससे प्रयुक्त की गई भाषा में प्रांजलता और सौष्ठव आता है। अनुवाद में विषयानुकूल शैली का प्रयोग हुआ है अथवा नहीं – इसकी जाँच पुनरीक्षक करता है और जहाँ कहीं आवश्यकता होती है वहाँ सुधार करता है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित अनुवादों को देखिए :

उदाहरण 1 : The Municipal Committee will supply eggs to the schools.
म्यूनिसिपल कमेटी स्कूल को अंडे देगी।

उदाहरण 2 : Free treatment for the eyes.
मुफ्त आँखों का इलाज।

उदाहरण 3 : Jai Prakash has gone again into a state of unconsciousness.
जय प्रकाश फिर बेहोशी की हालत में चले गए।

उदाहरण 1 के अनुवाद से ऐसा प्रतीत होता है कि नगरपालिका एक मुर्गी है और वह स्कूलों को अंडे देगी। दूसरे उदाहरण में, अनूदित पाठ से यह भाव मिलता है कि जैसे आँखें मुफ्त हैं, न कि इलाज। इसी प्रकार तीसरे उदाहरण से यह प्रतीत होता है कि जय प्रकाश अपनी इच्छा से बेहोश हो गए हैं, जबकि ऊपर दिए गए तीनों उदाहरणों का सही अनुवाद इस प्रकार होना चाहिए :

- नगरपालिका स्कूलों में अंडों की आपूर्ति करेगी।
- आँखों का मुफ्त इलाज।
- जय प्रकाश फिर से बेहोश हो गए।

उदाहरण 4 : The dacoit succeeded in escaping.
डाकू भागने में सफल हो गया।

उदाहरण 5 : The work is in progress.
कार्य प्रगति पर है।

उपर्युक्त दोनों उदाहरण शब्दानुवाद का संकेत करते हैं। उदाहरण 4 के अनुवाद में डाकू के भागने की बात प्रशंसा वाले भाव से कही गई प्रतीत होती है। जबकि अर्थ की दृष्टि से यह अनुवाद इस प्रकार होना चाहिए, 'डाकू बचकर भाग गया' अथवा 'डाकू निकल भागा'। इसी प्रकार, उदाहरण–5 के अनुवाद में 'यहाँ काम हो रहा है।' लिखना अधिक उपयुक्त होगा।

छोटे से छोटे पाठ का यहाँ तक कि किसी निमंत्रण–पत्र का अनुवाद है और उसकी भाषा में अपेक्षित विनम्रता एवं शिष्टता नहीं है तो पुनरीक्षक उसमें अपेक्षित सुधार करेगा। यहाँ एक निमंत्रण–पत्र का उदाहरण दिया गया है :

The Ministry of Defence

Requests the pleasure of the presence of

.....

at the Republic Day Prade on Tuesday, the 26th January, ... at 10.00 a.m.

on Rajpath, New Delhi The President will take the salute.

उपर्युक्त निमंत्रण–पत्र के निम्नलिखित अनुवाद को पढ़िए :

रक्षा मंत्रालय

.....

उपस्थिति का हर्ष पाने का अनुरोध करता है।

गणतंत्र दिवस परेड पर मंगलवार, 26 जनवरी, ... को 10 बजे प्रातः

राजपथ, नई दिल्ली पर राष्ट्रपति सलामी लेंगे।

यह अनुवाद शाब्दिक रूप से गलत न होने पर भी हिंदी में लिखे जाने वाले निमंत्रण–पत्र की शैली में नहीं प्रस्तुत हुआ है। पुनरीक्षक उसे हिंदी में निमंत्रण के ढंग से प्रस्तुत करते हुए इसका सही अनुवाद इस प्रकार प्रस्तुत करेगा :

रक्षा मंत्रालय

.....को

मंगलवार, 26 जनवरी, ... को 10 बजे प्रातः नहीं दिल्ली में राजपथ पर आयोजित गणतंत्र दिवस परेड में सादर आमंत्रित करता है। राष्ट्रपति सलामी लेंगे।

पुनरीक्षक यह भी देखता है कि कहीं गंभीर अथवा पांडित्यपूर्ण विषय को बहुत अधिक सरलीकृत शैली में तो नहीं कहा गया अथवा अत्यंत सरल विषय को जटिल शैली में तो नहीं कहा गया। इसके अलावा, अनुवादक ने मूल कथ्य के मनोभावों एवं स्थितियों के अनुकूल शैली अपनाई है अथवा नहीं।

इसी प्रकार, पुनरीक्षक यह भी देखता है कि अनूद्य सामग्री किन लोगों द्वारा पढ़ी जानी है यानी अनूदित पाठ का प्रयोक्ता कौन है। उन प्रयोक्ताओं की अपेक्षाओं के अनुरूप सुधार

और संशोधन भी वह अनूदित पाठ में करता है। मान लीजिए कोई अनूदित सामग्री विदेशी लोगों द्वारा पढ़ी जानी है तो पुनरीक्षक को देखना होगा कि अनुवाद कुछ ऐसा तो नहीं है जो विदेशियों को संस्कार अथवा परिवेश की भिन्नता के कारण समझ में न आ सके।

19.3.6 अनूदित पाठ की लक्ष्य भाषा संस्कृति की दृष्टि से जाँच

प्रत्येक भाषा किसी संस्कृति विशेष से जुड़ी होती है। जिस समाज और संस्कृति को वह भाषा अभिव्यक्त करती है, उस समाज और संस्कृति का अपने में वहन भी करती है।

स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दो भिन्न भाषा–भाषी समाजों का प्रतिनिधित्व करती हैं। कभी–कभी यह भिन्नता बहुत अधिक होती है और कभी–कभी बहुत कम। उदाहरण के लिए, विभिन्न भारतीय भाषाओं में काफी सांस्कृतिक एकता है, लेकिन विदेशी भाषाओं से उनकी वैसी सांस्कृतिक समानता नहीं है। अनुवाद की प्रक्रिया में किया जाने वाला भाषांतरण एक हद तक सांस्कृतिक अंतरण भी होता है। कथ्य को स्रोत भाषा की संस्कृति से लक्ष्य भाषा की संस्कृति में अंतरित किया जाता है। पुनरीक्षण करते समय पुनरीक्षक को यह तो देखना ही पड़ता है कि अनुवाद में वही कहा गया है, जो स्रोत भाषा में मौजूद है। लेकिन इसके साथ ही यह भी देखना पड़ता है कि लक्ष्य भाषा संस्कृति में वह बात ग्राह्य है अथवा नहीं। कुछ बातें कुछ समाजों में स्वीकार्य होती हैं, लेकिन दूसरे समाजों में नहीं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी का वाक्य है – 'He is as humble as a sheep.'

अब यदि इस वाक्य का हिंदी अनुवाद 'वह भेड़ की तरह विनम्र (भला) है।' कर दिया गया है तो यह सर्वथा अनुपयुक्त है। पुनरीक्षक को विनम्रता की ऐसी उपमा देनी होगी जो हिंदी भाषा संस्कृति में सहज रूप से स्वीकार्य हो और मान्य है। जैसे, वह यह लिख सकता है कि 'वह तो बिल्कुल गऊ है।'

19.3.7 फॉर्मेट संपादन

अन्य सब तरह के भूल सुधार और संशोधन के पश्चात् अनुवादक अनुवाद का मूल पाठ के फॉर्मेट के अनुरूप संपादन करता है। प्रत्येक पाठ्य–सामग्री का एक बाहरी ढाँचा होता है जिसमें पाठ के विभिन्न अध्यायों/अनुच्छेदों के विभाजन, पैराग्राफ विभाजन, अंकन, विभिन्न खंडों के लिए अलग–अलग अंकों अथवा वर्णाक्षरों का प्रयोग, चित्र–आरेख आदि के निर्धारित स्थान आदि की जाँच करता है और उनमें अपेक्षित सुधार करता है। ऐसा करते समय वह स्रोत भाषा पाठ का अनुपालन करते हुए भी आवश्यकता के अनुसार लक्ष्य भाषा की प्रवृत्ति का अनुसरण करता है। उदाहरण के लिए, विभिन्न खंडों के लिए वर्णांकित संख्याओं a, b, c, d, e, f, g, h, i, j ..... आदि के लिए यदि हिंदी में अ, ब, स, द..... संख्याएँ प्रयुक्त की जाएँ तो उपयुक्त नहीं रहतीं। न ही इसके उद्देश्य के लिए अ, आ, इ, ई..... स्वरों का वर्णक्रम भी स्वीकार्य है। हिंदी वर्णों का गिनती के लिए प्रयोग करना क, ख, ग, घ के क्रम में चलता है। चूँकि यह हिंदी में मान्य पद्धति है, इसलिए अनुवाद में इसी को अपनाना अपेक्षित होता है।

पुनरीक्षक को देखना यह होता है कि जहाँ मूल में संख्यांक 1, 2, 3, 4 आदि है, वहाँ अनुवाद में संख्यांक ही रहें और जहाँ रोमन अंक हैं वहाँ उन्हीं को रखा जाए यानी i, ii, iii, iv आदि को इसी ढंग से लिखा जाए। और, जहाँ वर्णों द्वारा अंकन है वहाँ क, ख, ग आदि वर्ण प्रयुक्त किए जाएँ।

19.4 पुनरीक्षण कौन करता है?

पुनरीक्षक की प्रक्रिया में क्या–क्या कार्य किए जाते हैं यह जानने के बाद आपके मन में सहज सवाल उठा होगा कि पुनरीक्षण किसका कार्य है? उसे कौन करता है?

पुनरीक्षण की प्रक्रिया का अध्ययन करते समय आपने देखा कि यह अनुवाद का अगला चरण है। यानी अनुवाद हो जाने के बाद उसमें सुधार–संशोधन का कार्य है। इस दृष्टि से पुनरीक्षण वही कर सकता है जो अनुवाद कर सकता है यानी अनुवादक ही पुनरीक्षण कर सकता है। तो क्या अनुवादक अपने द्वारा किए गए अनुवाद का स्वयं ही पुनरीक्षण भी करता है। नहीं, ऐसा नहीं होता। अनुवादक द्वारा अपने अनुवाद के मूल से मिलान और सुधार को जाँच तो कहा जा सकता है, लेकिन पुनरीक्षण नहीं। इससे यह स्पष्ट है कि पुनरीक्षक अनुवादक स्वयं न होकर अन्य व्यक्ति होता है। यह अन्य व्यक्ति कौन है?

संस्थागत स्तर पर कराए गए अनुवाद के लिए औपचारिक रूप से पुनरीक्षक की व्यवस्था होती है। अनुवादकों द्वारा अनुवाद कर लिए जाने के बाद वह अनुवाद पुनरीक्षक को सौंपा जाता है जो पुनरीक्षण करके अनुवाद को अंतिम रूप देता है। विभिन्न सरकारी कार्यालयों तथा स्वायत्त संस्थाओं में पुनरीक्षण का कार्य आम तौर पर अनुवाद अधिकारी अथवा हिंदी अधिकारी या सहायक निदेशक या वरिष्ठ अधिकारी आदि द्वारा किया जाता है। अनुवाद से संबद्ध अन्य संस्थाएँ जो अनुवाद कराती हैं वे अपना पुनरीक्षण कार्य वरिष्ठ विद्वानों अथवा अनुवाद के क्षेत्र के वरिष्ठ और जाने–माने लोगों से कराती हैं।

वैयक्तिक स्तर पर किए गए अनुवाद को भी अनुवादक विषय और भाषा के जानकार व्यक्ति को पढ़ने के लिए देता है और उसके सुझावों पर विचार करता है। दोनों ही स्थितियों में पुनरीक्षक अनुवाद के क्षेत्र का अनुवादक से अधिक जानकार, अनुभवी और वरिष्ठ व्यक्ति होता है। कहा जा सकता है कि पुनरीक्षक बेहतर और उच्चतर श्रेणी का अनुवादक होता है, जिसमें स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की गहन जानकारी के अलावा गंभीर विवेक और आत्मविश्वास होता है। मूल पाठ और अनूदित पाठ की तुलना वह बहुत बारीकी से कर लेता है। कहने का अभिप्राय यह है कि अपने अनुभव और कौशल–क्षमता के आधार पर वह अनुवाद को सँवारता और अधिक सुगढ़ बनाता है।

19.5 पुनरीक्षक प्रशिक्षक भी होता है

आप पढ़ चुके हैं कि पुनरीक्षक अनुवाद की जाँच और संपादन करता है। इसके अलावा भी वह एक और महत्वपूर्ण दायित्व वहन करता है। यह दायित्व है – अनुवाद प्रशिक्षक का। इसके लिए पुनरीक्षक कोई कक्षा अथवा कार्यशाला नहीं चलाता। अनुवाद के पुनरीक्षण के दौरान वह जो सुधार और परिवर्तन करता है उन्हें अनुवादक को दिखाया जाता है। अनुवादक अपने अनुवाद और उसमें किए गए संशोधनों की तुलना करता है। ये संशोधन एक तरह से अध्यापकीय टिप्पणियों (Remarks) का कार्य करते हैं। अनुवादक दोनों की तुलना करने पर समझ जाता है कि उससे मूल पाठ को समझने अथवा उसे अनूदित रूप में प्रस्तुत करने में कहाँ पर चूक हो गई है अथवा कहाँ बात को और बेहतर ढंग से या प्रभावशाली ढंग से कहा जा सकता है।

जिन संस्थाओं में पुनरीक्षक औपचारिक ढंग से नियुक्त हैं वहाँ तो अनुवाद उनकी ही देखरेख में होता है। अनुवादक को जहाँ कहीं भी समझने, उपयुक्त पर्याय तलाशने अथवा अभिव्यक्त करने में कठिनाई होती है वहीं वह पुनरीक्षक से संपर्क करता है। पुनरीक्षक उसकी समस्या का समाधान देता है। अपने अनुभव और बेहतर जानकारी के आधार पर वह अनुवादक का मार्गदर्शन करता है। संदेह की स्थितियों में वह सही समाधान देकर न केवल अनुवादक का संदेह निवारण करता है बल्कि उसे सही–गलत की पहचान का आत्मविश्वास प्रदान कराने की कोशिश करता है। अच्छे पुनरीक्षक के मार्गदर्शन में अनुवादक अपनी ग्रहणशीलता और अभिव्यक्ति क्षमता को पर्याप्त ढंग से परिमार्जित कर पाता है। वह पुनरीक्षित सामग्री का पुनःपठन करके अपनी भूलों को समझता है और भविष्य में उन भूलों से बचता है। इतना ही नहीं, जब कभी अनुवादक महसूस करता है कि वह पुनरीक्षित संशोधन से सहमत नहीं है तो वह पुनरीक्षक से उस विषय पर विचार–विमर्श करके अपनी शंका का समाधान कर सकता है। इस तरह यह कहा जा सकता है कि पुनरीक्षक अनुवादकों की अनुवाद सीखने को प्रक्रिया में उनके प्रशिक्षक का कार्य करता है।

19.6 पुनरीक्षण का महत्व

अनुवाद एक व्यावहारिक कार्य है, इसलिए इसमें त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। इन्हें 'अनुवाद दोष' भी कहा जा सकता है। मूल पाठ और अनूदित पाठ के बीच जो संबंध निहित रहता है वह संदेश (अर्थ) पर आधारित होता है। इस संदेश में गड़बड़ी होने पर अनूदित पाठ में निष्पन्न संदेश में दोश आने की संभावना रहती है। संदेश भाषा और विषय–वस्तु में से किसी एक में दोष आ जाने से अन्विति बिगड़ जाती है, और संदेश असंप्रेषणीय हो जाता है। इसकी जाँच–पड़ताल के लिए पुनरीक्षण की आवश्यकता रहती है।

अनूदित पाठ में विभिन्न भाषायी स्तरों पर कई दोश मिल जाते हैं। ध्वनि, वर्तनी, रूप, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य और प्रोक्ति आदि संरचनागत इकाइयों के अतिरिक्त शैलीगत दोष भी पाए जाते हैं। भाषा की प्रकृति के अनुसार कई बार वाक्यों में परस्पर संयोजन नहीं होता जिससे पाठ दुर्बोध या अटपटा हो जाता है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित वाक्य और उसका हिंदी अनुवाद देखिए :

मूल : 'The explanation furnished by the candidate is not found satisfactory.'
अनुवाद : 'अभ्यर्थी द्वारा प्रस्तुत स्पष्टीकरण संतोषजनक नहीं पाया गया।'

उपर्युक्त अनूदित वाक्य हिंदी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है। पुनरीक्षक इसमें सुधारकर लिख देता है कि 'अभ्यर्थी ने जो स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया है, वह संतोषजनक नहीं पाया गया।' तो वह वाक्य हिंदी की प्रकृति के अनुकूल अधिक स्वाभाविक और सहज लगता है। इसी प्रकार, 'no enclosure allowed' वाक्यांश का अनुवाद 'संलग्नकों की अनुमति नहीं है।' किया जाए तो यह न तो संप्रेषणीय होगा और न ही बोधगम्य। पुनरीक्षक इसे संप्रेषणीय और बोधगम्य बनाने के लिए 'इस पत्र में कुछ न रखें' वाक्य से संशोधित कर देता है तो यह वाक्य अधिक सरल और सहज लगता है। इस प्रकार अनेक भाषायी दोषों के निराकरण की संभावना पुनरीक्षण के दौरान होती है।

विषय–वस्तु के स्तर पर विषय और पाठक दोनों का संदर्भ निहित रहता है। मूल पाठ का विषय प्रशासनिक, विधिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, सामाजिक विज्ञान अथवा विज्ञापन संबंधी हो सकता है। अनुवाद करते समय उसमें कई बार शब्दावलीपरक और संरचनागत दोष आ जाते हैं, जो विषय के अनुकूल नहीं होते। उदाहरण के लिए, 'Company Director' के लिए 'कंपनी निदेशक' या 'कंपनी संचालक' में से किसी एक पर्याय का निर्धारण करना है। अनुवादक द्वारा दिए गए पर्यायों को पुनरीक्षक संदर्भ के अनुसार तौलकर देखता है कि वह पर्याय उपयुक्त हैं अथवा नहीं। उपयुक्त न प्रतीत होने पर वह सही पर्याय निर्धारण करता है। मान लीजिए, अनुवादक 'venom' और 'poison' के लिए एक ही शब्द 'विश' का प्रयोग करता है, किंतु दोनों की अलग–अलग संकल्पनाएँ होने के कारण पुनरीक्षक उन दोनों में अंतर करेगा।

विषय–वस्तु की प्रकृति के अनुसार भाषा विशिष्ट होती है। साहित्यिक रचना के अनूदित पाठ की भाषा को परखते समय इस विवेक से काम लिया जाता है कि उसमें कितनी संप्रेषणीयता, सर्जनात्मकता और प्रभावोत्पादकता है तथा आवश्यकता पड़ने पर उसमें कितना सुधार किया जा सकता है। लेकिन साहित्येतर अनुवाद को यथातथ्य, सहज, सुबोध और प्रवाहशील बनाने के लिए पुनरीक्षक पर्यवेक्षक की भूमिका अदा करता है।

अनुवाद करते समय अनुवादक कई बार यह भूल जाता है कि मूल कृति का अनुवाद किसके लिए किया जा रहा है। पुनरीक्षण के समय पुनरीक्षक इस बात की ओर ध्यान रखकर संशोधन करता है। उदाहरण के लिए, 'No admission' के लिए तीन वैकल्पिक अनुवाद मिलते हैं – (1) प्रवेश निषेध, (2) अंदर आना मना है, (3) अंदर न आइए। अब यहाँ पुनरीक्षक यह देखेगा कि यह अनुवाद किस वर्ग के लिए किया गया है। उसी के अनुरूप अनूदित पाठ का निर्धारण करेगा और आवश्यकता के अनुसार संशोधन करेगा। इसीलिए अनुवाद को एक लचीली अवधारणा माना जाता है क्योंकि इसमें संदर्भगत कारण काम करते हैं और वही उसे सफल अनुवाद की श्रेणी में ले जाते हैं। इसी बिंदु पर पुनरीक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

कई बार किसी मूल पाठ का अनुवाद कई अनुवादकों से कराया जाता है। प्रत्येक अनुवादक की अपनी शैली होती है। किसी की शैली तत्सम–प्रधान होती है तो किसी की शैली सामान्य बोलचाल की। कोई अनुवादक संयुक्त और मिश्र वाक्यों का अधिक प्रयोग करता है तो कोई सरल वाक्यों का। इस शैलीगत भिन्नता से अनूदित पाठ सहज और सुबोध नहीं हो पाता। पुनरीक्षण के दौरान उस पाठ में शैलीगत एकरूपता लाने के कई वैकल्पिक पर्याय होते हैं और उन्हें अपने विवेक एवं रुचि से प्रयुक्त करता है। इससे अनूदित कृति की बोधगम्यता और संप्रेषणीयता को आघात पहुँचता है। इसलिए, पुनरीक्षक की भूमिका यहाँ महत्वपूर्ण है कि वह इन वैकल्पिक पर्यायों में एकरूपता लाए ताकि अनूदित पाठ में, विशेष कर तकनीकी साहित्य में बोधगम्यता और संप्रेषणीयता के संदर्भ में कोई आघात न पहुँचे। यहाँ पुनरीक्षण का महत्व अनूदित पाठ में समन्वय और समरूपता लाने में है।

यह बात ध्यान योग्य है कि पुनरीक्षण अनुवाद से अलग विधा नहीं है। यह अनुवाद–प्रक्रिया का अंतिम सोपान माना जा सकता है जो लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार अनूदित पाठ को मूल पाठ का सहपाठ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें शब्दावली, संरचना और शैली की एकरूपता तो रहती ही है, साथ में यह अनूदित पाठ में प्रामाणिकता, संप्रेषणीयता, स्वाभाविकता और प्रभावेत्पादकता लाने का कार्य भी करता है।

इस प्रकार पुनरीक्षण में मूलनिष्ठता को ध्यान में रखकर अनुवाद को सफल और अच्छा बनाने का प्रयास रहता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि पुनरीक्षण द्वारा अनुवाद की जाँच, सुधार और साज–सँवार की जाती है। इससे अनुवाद की अशुद्धियाँ तो सुधरती ही हैं, उसका अनगढ़पन भी दूर होता है और उसमें परिष्कृति और सौष्ठव आता है। वैसे तो अच्छा अनुवादक स्वयं ही अपने अनुवाद को मूल से मिलाकर एक बार दोहराता है और भूल सुधार तथा भाषा शोधन करता है। लेकिन किसी अन्य कुशल एवं सिद्धहस्त अनुवादक द्वारा पुनरीक्षण करने से अनुवाद में वस्तुनिष्ठता आने की संभावना अधिक रहती है। अनुवादक का स्वयं अपने अनुवाद के प्रति एक तरह का सर्जनात्मक राग हो जाता है, जो स्वाभाविक ही है। ऐसे में कई बार वह अपने अनुवाद के दोषों को देख पाने में सक्षम नहीं हो पाता। लेकिन जब अन्य कुशल पुनरीक्षक मूल और अनुवाद को पढ़ते समय तटस्थ दृष्टि अपनाता है तो मूल और अनुवाद की तुलना काफी बारीकी से कर पाता है और गलतियों को सहजता से पकड़ पाता है।

पुनरीक्षण का महत्व न केवल मनुष्य द्वारा किए गए अनुवाद में ही है, बल्कि मशीन (कंप्यूटर) द्वारा किए गए अनुवाद में तो यह एक तरह से अनिवार्य ही है। मशीनी अनुवाद संबंधी इकाई 16 और 17 में आपने मशीन (कंप्यूटर) से अनुवाद के दौरान मानवीय सहायता के विभिन्न पक्षों के बारे में भी अध्ययन किया है। पूर्व संपादन, पश्च संपादन आदि प्रक्रिया में अनुवादक वास्तव में पुनरीक्षक की भूमिका ही अदा करता है और मशीन के किए गए अनुवाद को जाँचता और सुधारता है।

19.7 पुनरीक्षण का अभ्यास

पुनरीक्षण के अभ्यास के संदर्भ में हम अंग्रेजी के एक वाक्य 'Why is infant mortality rate considered a good measure for the development?' को देखते हैं। मान लीजिए अनुवादक ने इसका अनुवाद 'शिशु मरणता दर को विकास के स्तर के मानदंड के रूप में क्यों उपयुक्त माना जाता है?' किया है। इस अनूदित पाठ में सुधार के जो दो बिंदु प्रमुख रूप से नजर आते हैं, वे हैं – 'मरणता'; और 'विकास के स्तर के मानदंड'। इन्हें अंग्रेजी के क्रमशः और शब्दों के समतुल्य पर्याय के तौर पर प्रयुक्त किया गया है। पुनरीक्षण करते हुए इस वाक्य को जिस रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है, वह है – 'शिशु मृत्यु दर को विकास का स्तर मापने का उपयुक्त मानदंड क्यों माना जाता है?'

आइए, अब और अधिक अभ्यास करें। नीचे मूल पाठ और उसके साथ अनुवाद के कुछ उद्धरण दिए गए हैं और उसके बाद पुनरीक्षित अनुवाद दिया गया है। पहले मूल पाठ और अनूदित पाठ को ध्यान से पढ़िए और अनुवाद की गलतियों का पता लगाइए। उसके बाद पुनरीक्षित पाठ को पढ़िए। पुनरीक्षण संबंधी इस अभ्यास के लिए इस इकाई में सबसे पहले पदबंध/वाक्यांश स्तर पर कुछ उदाहरण दिए गए हैं। जब आप इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे तो आपको स्पष्ट हो जाएगा कि पुनरीक्षण क्यों आवश्यक है और इसका क्या महत्व है।

क्र. सं	मूल	अनुवाद	पुनरीक्षित पाठ
1	Court attachment Orders	न्यायालय का कुर्की संबंधी आदेश	न्यायालय द्वारा जारी कुर्की आदेश
2	Processing of indents & monitoring of supplies.	माँग–पत्र एवं मॉनीटरन आपूर्ति संबंधी प्रक्रिया।	माँग–पत्र संबंधी प्रक्रिया और पूर्ति की मॉनीटरिंग।
3	Centre of Advance Studies	प्रगति अध्ययन केंद्र	उच्च अध्ययन केंद्र
4	Ground realities	भूमि की वास्तविकता	ठोस वास्तविकता/ वस्तु–स्थिति
5	Resource person	संसाधन विशेषज्ञ	विषय–विशेषज्ञ

नीचे कुछ वाक्यों के अनुवाद और पुनरीक्षित अनुवाद नमूने के तौर पर दिए गए हैं। अब आप को अुनवाद और पुनरीक्षित अनुवाद में तुलना करके देखना होगा कि अनुवाद के स्तर पर क्या और किस प्रकार की गलतियाँ हुई हैं और पुनरीक्षण करते समय उनमें क्या और किस प्रकार के संशोधन किए गए हैं।

1 **मूल पाठ :** Juvenile justice is the area of criminal law applicable to persons not old enough to be held responsible for criminal acts.

अनुवाद : किशोर न्याय आपराधिक विधि का ऐसा क्षेत्र है जो उन व्यक्तियों पर लागू होता है जो आपराधिक कार्यों के लिए जिम्मेदार होने के लिए बड़ी आयु के नहीं होते।

पुनरीक्षित पाठ : किशोर न्याय दंड विधि का ऐसा क्षेत्र है जो ऐसे किशोरों पर लागू होता है जिनकी अवस्था (आयु) इतनी नहीं होती कि उन्हें आपराधिक कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सके।

2 **मूल पाठ :** An early compliance of the above will be appreciated.

अनुवाद : उपर्युक्त के शीघ्र अनुपालन की प्रशंसा की जाएगी।

पुनरीक्षित पाठ : उपर्युक्त विषय पर शीघ्र कार्रवाई करने पर हम आपके आभारी होंगे।

उपर्युक्त पहले उदाहरण में 'व्यक्तियों' शब्द का प्रयोग करने से किशोरावस्था शब्द छूट गया है। अतः किशोर न्याय की भावना द्योतित नहीं होती, जबकि प्रस्तावित अनुवाद में 'व्यक्तियों' के स्थान पर 'किशारों' और 'आयु' के स्थान पर 'अवस्था' शब्दों का प्रयोग करने से किशोर न्याय के सिद्धांत का औचित्य सिद्ध हो जाता है। इसी प्रकार criminal law पारिभाषिक शब्द है जिसके लिए पर्याय 'दंड विधि' है, न कि 'आपराधिक विधि'। इसी प्रकार कोश देखे बिना अनुवादक ने अपने अल्प ज्ञान के आधार पर appreciation

शब्द के लिए 'प्रशंसा' शब्द का प्रयोग किया है। यहाँ पुनरीक्षक मूल शब्द को सही परिप्रेक्ष्य में शुद्ध करेगा।

3 **मूल पाठ :** Member of the service is expected to study as many as foreign languages as he may be able to do without check to his other service.

अनुवाद : सरकारी कर्मचारी से अपेक्षा की जाती है कि वह अनेक विदेशी भाषाओं का अध्ययन करे क्योंकि वह अपने अन्य कार्यों का नुकसान किए बिना ऐसा कर सकता है।

पुनरीक्षित पाठ : इस सेवा के कर्मचारी (सदस्य) से अपेक्षा की जाती है कि वह अधिक से अधिक विदेशी भाषाएँ सीखें लेकिन इस बात का भी ध्यान रखे कि इससे उसके अन्य कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े।

उपर्युक्त उदाहरण में अनुवादक ने स्रोत भाषा के as many as...as he may के पाठ का सही विश्लेषण न कर अर्थ में त्रुटि कर दी। अपने अन्य कार्यों का नुकसान किए बिना से उसके व्यक्तिगत कार्य का बोध होता है जबकि प्रस्तावित अनुवाद में उसके अन्य कार्यों से अभिप्राय उसे सौंपे गए कार्यालयी कार्यों का बोध होता है।

4 **मूल पाठ :** Prem Chand is the greatest name in modern Indian Literature, and next to Rabindranath Tagore, the only one known outside Hindi. He pushed modern Hindi and Urdu fiction from the medieval age of the present times.

अनुवाद : आधुनिक भारतीय साहित्य में प्रेमचंद का नाम सबसे अधिक जाना जाता है। उनके बाद रवींद्रनाथ टैगोर ही एकमात्र साहित्यकार है जिन्हें भारत से बाहर भी जाना जाता है। प्रेमचंद ने आधुनिक हिंदी और उर्दू कथा साहित्य को मध्यकालीन युग से निकालकर वर्तमान काल से संबद्ध किया।

पुनरीक्षित पाठ : प्रेमचंद आधुनिक भारतीय साहित्य की महान विभूति हैं और रवींद्रनाथ टैगोर के बाद वे एकमात्र ऐसे साहित्यकार हैं जिनकी ख्याति हिंदी साहित्य से बाहर भी है। प्रेमचंद ने आधुनिक हिंदी और उर्दू कथा साहित्य को मध्यकालीन युग से निकालकर आधुनिक रूप में प्रतिस्थापित किया।

इस उदाहरण में अनुवादक ने अनुवाद में टैगोर का नाम प्रेमचंद के बाद कर दिया है जिसे पढ़कर मूल पाठ का सही बोध न होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

5 **Ekwy ikB %** At the time of making these statements by the Hon. Minister the Secretary has to remain present in the official Gallery, Lok Sabha to assist, if necessary, the Minister, and also to attend to any exigencies that may arise in relation to these statements.

vuqokn % श्रीमान मंत्री महोदय द्वारा यह वक्तव्य देने के समय सचिव को सरकारी दीर्घा, लोकसभा में सहायता के लिए उपस्थित रहना होता है। मंत्री भी ऐसी आकस्मिकता में सहायता करते हैं, जो वक्तव्य के संबंध में हो सकती है।

Ikqujhf{kr ikB % माननीय मंत्री महोदय द्वारा वक्तव्य दिए जाने के समय सचिव को लोकसभा की सरकारी दीर्घा में रहना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर वे माननीय मंत्री महोदय को सहयोग दे सकें और उनके वक्तव्य से उत्पन्न किसी आकस्मिक स्थिति का समाधान कर सकें।

6 **मूल पाठ :** At any time before the item included in the list of Business is taken up by the House, the Govt. can withdraw that item.

अनुवाद : किसी भी समय सदन द्वारा किसी मद को कार्यों की सूची में शामिल करने से पहले लिए जाने पर सरकार इस मद को वापस ले सकती है।

पुनरीक्षित पाठ : सदन द्वारा किसी मद को कार्यों की सूची में शामिल किए जाने से पहले सरकार उस मद को कभी भी वापस ले सकती है।

उपर्युक्त वाक्य में At any time before पदबंध का अर्थ देते समय पदक्रम सही नहीं है।

वाक्यों का पुनरीक्षण करने के बाद, आइए, अब अनुच्छेद का पुनरीक्षण करें। नीचे दिए गए अंग्रेजी पाठ और उसके अनुवाद को मिलाइए। देखिए अनुवाद में क्या सुधार किया जा सकता है। सुधार करते हुए पुनरीक्षण कीजिए।

मूल पाठ :

Cultural anthropology, on the other hand, has a far wider breadth of interest than related fields in the social sciences and humanities, each of which takes up some segment of human activity. The cultural anthropologist generally studies peoples who are outside the stream of European cultural history and attempts, as far as he can, to investigate a given body of custom as a whole, or, if he concentrates on any one aspect of a culture, he takes a primary objective, the analysis of the interrelation of that aspect with the other phases of the life of the people. He analyses these aspects not only as to which is to be distinguished from the others, but also all these form a functioning system that adapts the people to their setting. In this, the anthropologist differs from the economist,

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

the political scientist, the sociologist, the student of comparative religions or art or literature.

अनूदित पाठ :

दूसरी ओर सांस्कृतिक मानवशास्त्र का अन्य संबधित सामाजिक विज्ञानों और मानव विज्ञानों की तुलना में अभिरुचि का विस्तार कहीं अधिक है, जिनमें से प्रत्येक किसी एक विभाग से संबंधित मानवक्रिया का अध्ययन करता है। सांस्कृतिक मानवशास्त्री सामान्यतः उन जनसमूहों का अध्ययन करता है जोकि यूरोपीय सांस्कृतिक इतिहास की धारा से बाहर है, और वह यथासंभव किसी विशेष रीति–रिवाज का समग्र रूप में अध्ययन करने का प्रयत्न करता है या, यदि वह संस्कृति के किसी एक पहलू पर अपना ध्यान केंद्रित करता है तो उसका प्रमुख लक्ष्य उस पहलू के अंतःसंबंधों का विश्लेषण होता है जोकि लोगों के जीवन के अन्य पहलुओं से वह इन पहलुओं का विश्लेषण केवल इसलिए नहीं करता कि उसे औरों से पृथक दिखाया जाए, बल्कि चूँकि वह सब मिलकर एक कृत्यात्मक पद्धति बनाती है, जो जनता को अपने वातावरण के अनुकूल बनाती है। इसमें मानवशास्त्री अर्थशास्त्री, राजनीतिविज्ञानी, समाजशास्त्री एवं तुलनात्मक धर्म या कला या साहित्य के विद्यार्थी से पृथक है।

पुनरीक्षित पाठ :

दूसरी ओर सांस्कृतिक नृविज्ञान का विषय क्षेत्र सामाजिक विज्ञानों तथा मानविकी के अन्य संबंधित विषयों से अपेक्षाकृत कहीं विस्तृत होता है। इनमें मानवीय प्रक्रिया के किसी एक खंड का अध्ययन किया जाता है। सांस्कृतिक नृविज्ञानी प्रायः यूरोपीय सांस्कृतिक इतिहास की धारा के बाहर मानव समुदायों का अध्ययन करता है। उसका प्रयास होता है कि वह किसी विशिष्ट रीति–रिवाज के समग्र रूप का अध्ययन करे। या फिर यदि वह संस्कृति के किसी एक पक्ष पर ध्यान केंद्रित करता है तो उसका मुख्य उद्देश्य जनजीवन के अन्य पहलुओं के साथ उसी पहलू के अंतःसंबंधों का विश्लेषण करना होता है। वह इन पक्षों का विश्लेषण केवल इसलिए नहीं करता कि प्रत्येक को एक–दूसरे से पृथक रूप में पहचाना जा सके। बल्कि उन सबसे मिलकर एक ऐसी प्रकार्यात्मक प्रणाली निर्मित होती है जो लोगों को अपनी परिस्थितियों के अनुकूल ढाल लेती है। इस संबंध में नृविज्ञानी का मत अर्थशास्त्री, राजनीतिविज्ञानी, समाजशास्त्री तथा तुलनात्मक धर्म, कला या साहित्य के अध्येता विद्वान से भिन्न होती है।

उपर्युक्त पुनरीक्षण पर टिप्पणी

उपर्युक्त अनूदित और पुनरीक्षित पाठों में हम देखते हैं कि 'anthropology' और 'functioning system' के लिए क्रमशः 'मानवशास्त्र' और 'कृत्यात्मक पद्धति' के स्थान पर 'नृविज्ञान' और 'प्रकार्यात्मक प्रणाली' शब्द प्रयुक्त किए गए हैं। ये मानक शब्द माने गए हैं। यहाँ 'setting के लिए 'वातावरण' के स्थान पर 'परिवेश' का प्रयोग सटीक रहेगा। भाषा में विभिन्न संरचनागत संशोधन भी किए गए हैं। पुनरीक्षित पाठ में वाक्यों का संयोजन हिंदी की प्रकृति के अनुकूल है और अधिक बोधगम्य है।

19.8 आइए अभ्यास कीजिए

नीचे दिए गए अंग्रेजी पाठ और उसके अनुवाद को मिलाइए। देखिए अनुवाद में क्या सुधार किया जा सकता है। सुधार करते हुए पुनरीक्षण कीजिए।

अभ्यास 1

मूल पाठ : However, the assistance from the Guide will gradually lessen over this period of 20 to 30 days, so that towards the end of the second phase you are, by and large, able to plan and carry out activity sessions independently and handle children on your own.

अनूदित पाठ : फिर भी, इन 20 से 30 दिनों के समय में पथ–प्रदर्शक से मिलने वाली सहायता धीरे–धीरे कम होती जाएगी इसलिए, दूसरे दौर के अंत में आप खुलकर योजना बनाने एवं स्वतंत्रतापूर्वक अपनी गतिविधियाँ जारी रख सकेंगे और बच्चें को अपने तरीके से नियंत्रित करेंगे।

पुनरीक्षित पाठ : .....
.....
.....
.....

अभ्यास 2

मूल पाठ : This is the person who will help you to translate into practice the principles and acknowledge that you would have acquired through the first three courses of this Diploma.

अनूदित पाठ : यह वह व्यक्ति होता है जो इस डिप्लोमा के पहले तीन कोर्सों के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान एवं सिद्धांतों के अनुवाद में अभ्यास के दौरान आपकी सहायता करेगा।

पुनरीक्षित पाठ .....
.....
.....

अभ्यास 3

मूल पाठ : Security personnel on duty have instructions to verify the identity of the invitees. All invitees are, therefore, requested to bring along, also with the invitation Card, some documents to establish their identity e.g. Department Photo Identity Card/Passport/Driving Licence/Weapon Licence etc. This may cause some inconvenience. However, in the interest of security, kind cooperation of the invitees is solicited.

As the available parking space is limited, invitees are requested to shares, vehicles, as far as possible, to avoid inconvenience.

अनूदित पाठ : ड्यूटी पर तैनात सुरक्षा कार्मिकों को आदेश है कि वे आमंत्रित व्यक्तियों की पहचान करें। अतः सभी आमंत्रित व्यक्तियों से अनुरोध है कि वे अपने निमत्रंण–पत्र

के साथ अपनी पहचान के लिए अपना विभागीय फोटो पहचान–पत्र / पासपोर्ट / ड्राइविंग लाइसेंस / हथियार लाइसेंस आदि अपने साथ लाने का कष्ट करें। स्वाभाविक है कि इससे कुछ असुविधा होगी परंतु सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए आमंत्रित महानुभावों से सहयोग की अपेक्षा की जाती है।

वाहनों को पार्क करने के लिए जगह सीमित है इसलिए अनुरोध है कि जहाँ तक संभव हो, एक–दूसरे के वाहनों में बैठकर आएँ।

पुनरीक्षित पाठ : .....

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास 4

मूल पाठ : The Industrial Revolution brought the big machines into the world. It ushered in the Machine Age or the Mechanical Age. Of course there had been machines before, but none had been as big as the new machines. What is a machine? It is a big tool to help man to do his work. Man has been called a tool-making animal, and from his earliest days, he has made tools and tried to better them. His supremacy over the other animals, many of them more powerful than he is, was established because of his tools. The tool was an extension of his hand, or you may call it a third hand. The machine was the extension of the tool. The tool and the machine raised man above the brute creation. They freed human society from the bondage of nature.

अनूदित पाठ : विश्व में औद्योगिक घूर्णन से बड़े यंत्र आए। इससे यंत्र आयु अथवा यांत्रिक आयु की शुरुआत हुई। यह सही है कि इससे पूर्व–यंत्र थे, लेकिन इतने बड़े नहीं थे जितने बड़े औद्योगिक घूर्णन में थे। यंत्र क्या है? यह बड़ा औजार है जो मनुष्य को उसके काम में मदद देता है। मनुष्य को औजार–निर्माण–पशु कहा जाता है, और अपने शुरुआती दिनों में उसने औजार बनाए और उनमें सुधार करने का प्रयास किया। अन्य पशुओं पर उसका अधिकार, कई उससे अधिक शक्तिशाली थे, उसके औजारों के कारण निर्मित हुआ। औजार उसके हाथ को फैलाता है, अथवा तुम उसको तीसरा हाथ कह सकते हो। यंत्र, औजार को फैलाता है। औजार और यंत्र, मनुष्य को पशु सृजन से बढ़ाते हैं, वे मनुष्य समाज को प्रकृति की बंदिश से मुक्त कराते हैं।

पुनरीक्षित पाठ : .....

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास–5

मूल पाठ : Over the years, engineering industries in the country have registered a phenomenal growth to generate a strong base in a wide-range of heavy and light engineering industries covering a broad spectrum of capital goods and consumer durable products. Bulk of capital goods required for power projects, fertilizer plants, cement plants, steel plants, mining equipment and petrochemical plants are being met from indigenous production. Construction machinery and equipment for irrigation projects, diesel engines, pumps and tractors for agriculture, vehicles, etc., transport are also being met from within the country. Engineering industries have also demonstrated their capacity to manufacture large size plants and equipments for various sectors such as power generation, fertilizers and cement.

अनूदित पाठ : पिछले वर्षों के दौरान इंजीनियरी उद्योग ने शानदार प्रगति की है और भारी तथा हल्के इंजीनियरी उद्योगों के क्षेत्र में अपना आधार सुदृढ़ कर लिया है। इस उद्योग के अंतर्गत पूँजीगत साज–सामान और टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं समेत कई तरह का सामान बनाने वाले कारखाने शामिल हैं। पूँजीगत साज–सामान का निर्माण करने वाले उद्योग जो वस्तुएँ बनाते हैं, उनका उपयोग बिजली परियोजनाओं, उर्वरक संयंत्रों, सीमेंट कारखानों, इस्पात संयंत्रों, खनन उपकरणों तथा पेट्रो रसायन संयत्रों आदि में किया जाता है। इन उद्योगों के लिए आवश्यक भारी मशीनों और उपकरणों का उत्पादन अब देश में ही होने लगा है। इसके अलावा, सिंचाई परियोजनाओं के निर्माण में काम आने वाली मशीनों और उपकरणों, डीजल इंजनों, कृषि के लिए पंप सेटों और ट्रैक्टरों, वाहनों तथा परिवहन उपकरणों का भी देश में ही उत्पादन होने लगा है। इंजीनियरी उद्योग ने विद्युत उत्पाद, उर्वरक और सीमेंट उत्पादन जैसे विभिन्न क्षेत्रों के लिए विशाल आकार के संयंत्रों और उपकरणों के उत्पादन की अपनी क्षमता का भी परिचय दिया है।

पुनरीक्षित पाठ : .....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

19.9 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि पुनरीक्षण, अनुवाद पूरा हो जाने के बाद उसकी जाँच और सुधार कार्य है। पुनरीक्षण के दौरान अनूदित पाठ को मूल पाठ से मिलाकर पढ़ा जाता है और उसकी कथ्यगत तथा भाषागत गलतियों का सुधार किया जाता है। अनूदित पाठ को लक्ष्य भाषा की शैली की आवश्यकता के अनुसार संशोधित किया जाता है। फिर अनूदित पाठ का समग्रता में फॉर्मेट संपादन किया जाता है।

इस इकाई में आपने यह भी पढ़ा है कि पुनरीक्षक वास्तव में सिद्धहस्त अनुवादक ही होता है, जो पुनरीक्षण के साथ–साथ अनुवादकों को अनुवाद का कौशल भी सिखाता है। इस तरह, वह प्रशिक्षक की भूमिका भी निभाता है। अनुवाद के पुनरीक्षण के महत्व की जानकारी भी आपने इस पाठ में प्राप्त की।

19.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

1) पुनरीक्षण किसे कहते हैं? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।
2) पुनरीक्षण की प्रक्रिया के विभिन्न कार्यों का उल्लेख कीजिए।
3) पुनरीक्षण करने वाला क्या कहलाता है? अनुवादक से वह किस तरह भिन्न होता है?
4) पुनरीक्षक में प्रशिक्षक किस प्रकार निहित होता है?
5) पुनरीक्षण के महत्व पर पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

19.11 उपयोगी पुस्तकें

- कृष्ण कुमार गोस्वामी, 2008, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन.
- कैलाशचंद्र भाटिया, अनुवाद कला : सिद्धांत और अनुप्रयोग, नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन.
- पूरनचंद टंडन, अनुवाद–साधना, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली, 1998.
- कुसुम अग्रवाल, अनुवाद शिल्प : समकालीन संदर्भ, साहित्य सहकार, दिल्ली, 1999.
- दिलीप सिंह, साहित्येतर पाठ का संदर्भ, अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन.
- अनुवाद शतक (भाग 1 और 2), संपा. नीता गुप्ता एवं अन्य, भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली, 2001.
- दिलीप सिंह, 2013, अनुवाद की व्यापक संकल्पना, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन.